

## ८१. व्यवहार, विचार, अनुभव शुद्धि का स्वरूप

२३-०६-१३

मुख्य रूप में ये देखा गया कि अनुभव के आधार पर विचार, अनुभवमूलक विचार के आधार पर व्यवहार और कार्य शुद्ध होना पाया जाता है। अनुभव सहअस्तित्व में होना पाया गया है। पाने का मतलब प्रमाणित होने से है। प्रमाण होने के रूप में पाया गया है। ऐसे अनुभवमूलक विचार समाधान सम्पन्न होता ही है। दुसरे विधि से, अध्ययन विधि में व्यवहार का संयत होना, विचार का संयत होना, अवधारणा का स्थिर होने से बोध एवं अनुभव होता है। यह विकसित चेतना के ज्ञान, अध्ययन, अभ्यास, मनन, चिंतन से ही संभव है। विकसित चेतना का स्वरूप अपने में मानव, देव, दिव्य मानव के दृष्टि-विषय-स्वभाव के रूप में प्रस्तुत कर चुके हैं। इसी के अध्ययन, अभ्यास, आचरण, स्वीकार ही एक मात्र रास्ता है।

अध्ययन के लिए मूल वस्तु सहअस्तित्व ही है। सह-अस्तित्व अपने स्वरूप में सत्तामयता में सम्पृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति ही है। इसे हर व्यक्ति अध्ययन कर सकता है, अनुभव कर सकता है, समझ सकता है। इसी कारणवश विकल्प रूप में इसे प्रस्तुत किया है क्योंकि पहले से आदर्शवाद, भौतिकवाद प्रचलित रहा है। इसे भली प्रकार से आदमी जात चाहे ज्ञानी रहा हो, विज्ञानी रहा हो, चाहे मूर्ख रहा हो। सभी का सभी आदर्शवाद, भौतिकवाद को मानते रहे। आदर्शवाद रहस्य के मारे प्रमाणित नहीं हो पाया। मतलब आदर्शवाद रहस्य से मुक्त नहीं हो पाया। इसी प्रकार भौतिकवाद अपराध से मुक्त नहीं हुआ। आदमी जात अपनी तरह से बहुत प्रयत्न किया, कोशिश किया, प्रयोग किया, तप किया; सब कुछ किया। ये दोनों भाग जो प्रचलित रहा है, उक्त दोषों से मुक्त नहीं हुआ।

इसीलिये विकल्प विधि को प्रस्तुत करना पड़ा। और कोई कारण नहीं रहा। विकल्प का मतलब में आदर्शवाद, भौतिकवाद का विकल्प। विकल्प का मतलब इसके स्थान पर क्या होना चाहिए, अर्थात् भौतिकवाद, आदर्शवाद के स्थान पर क्या वाद को अपनाए? इस पर ध्यान किया, विचार किया, अभ्यास किया, साधना किया; ध्यान, उपासना, समाध, संयम विधि से विकल्प को प्राप्त किया। विकल्प विधि से हर व्यक्ति समझदार हो सकता है। कम से कम, ज्यादा से ज्यादा संख्या में मानव समझदार हो सकता है। ईमानदार हो सकता है। समझदारी के बिना ईमानदारी होता ही नहीं। इसको अच्छी तरह से परिशीलन किया है। समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी एक से एक जुड़ी हुई कड़ी है। इसी को दूसरी भाषा में कहा जा सकता है- मानव ही ज्ञान, विवेक, विज्ञानपूर्वक जीने की कला में प्रमाणित होता है। विज्ञान जीने की विधि है। विवेक विचार की विधि है। ज्ञान अनुभव ही है। इन सभी भागों में हर व्यक्ति पारंगत हो सकता है, क्योंकि प्रमाणित होना सम्भव है, समझना सम्भव है। समझने, प्रमाणित होने के आधार पर ही सर्वशुभ होना सम्भव हुआ है। इन सभी बातों को ध्यान रखते हुये विकल्प को प्रस्तुत किया है।

विकल्प ही विकसित चेतना का अध्ययन कराता है जिसको अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन कहा और नाम दिया है। यही मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद है। इस क्रम में हर मानव समझदार हो सकता है। समझदारी के पक्ष में हर मानव है ही। परम्परा भ्रम-मुक्त, अपराध-मुक्त नहीं हो पाया। इस ढंग से मानव जात अपराध, भ्रम, संघर्ष, युद्ध से मुक्त होकर प्रमाण

परम्परा के रूप में जीने के लिये विकल्प को प्रस्तुत किया है। इसीलिये मानव जात अपराध और भ्रम से मुक्त होना चाहता है, संघर्ष एवं युद्ध से मुक्त होना चाहता है। सभी भले न चाहते हों, कुछ लोग तो चाह ही रहे हैं। इसीलिये विकल्प विचारधारा की आवश्यकता रही है। ऐसी विचारधारा को सूक्ष्म रूप में प्रस्तुत किया है। इसमें मूल सिद्धांत को स्पष्ट किया है। व्यवहारिक सिद्धांत को प्रस्तुत किया है। मूल सिद्धांत सह-अस्तित्व रूप में स्पष्ट है। चेतना विकास के रूप में मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना स्पष्ट है। यही व्यवहार, विचार और अनुभव में विकसित चेतना पूर्वक पारंगत होने का तात्पर्य है। यही अवधारणा, बोध, अनुभव, अनुभवमूलक विचार, अनुभवमूलक विचार सम्पन्न व्यवहार और कार्य करना ही प्रमाण है। यह प्रमाण ही अनुभव प्रमाण, विचार प्रमाण, व्यवहार- कार्य प्रमाण के रूप में कहा है। इसे हर व्यक्ति परिशीलन कर सकता है, पारंगत हो सकता है; जिससे व्यवहार शुद्धि, विचार शुद्धि, अनुभव शुद्धि स्पष्ट होता है।

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो।

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) |  
अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)